

---

# Shri Veda Vyasa Karavalambana Stotram

---

## श्रीवेदव्यासकरावलम्बनस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Shri Veda Vyasa Karavalambana Stotram

File name : vedavyAsakarAvalambanastotram.itx

Category : deities\_misc, gurudev

Location : doc\_deities\_misc

Author : Yadavarya

Transliterated by : Krishnananda Achar

Proofread by : Krishnananda Achar

Latest update : August 28, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 3, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीवेदव्यासकरावलम्बनस्तोत्रम्



त्रय्या विकासकमजं मुहुरन्तदेव  
सञ्चिन्त्य मध्वगुरुपादयुगं गुरुंश्च ।  
वेदेश पादजलजं हृदि साधुकृत्वा  
संप्रार्थये श्रुतिविकासक हस्तदानम् ॥ १ ॥

पद्मासनादि सुरसत्तमभूसुरादि  
सल्लोक बोधदहरे बदरी निवासिन् ।  
सच्छास्त्रशस्त्र हृतसत्कुमते सदिष्ट  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २ ॥

आम्नाय विस्तर विशारद शारदेश  
भूतादिपादिसुरसंस्तुत पादपद्म ।  
योगीश योगि हृदयामलकञ्जवास  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३ ॥

सद्ब्रह्मसूत्र वरभारत तन्त्रपूर्व  
निर्माण निर्मलमतेखिलदोषदूर ।  
आनन्दपूर्णं करुणाकर वेवदेव  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ४ ॥

अर्कात्मजा जलतरङ्गविचारिचारु  
वायूपनीत शुभगन्ध तरूपवासिन् ।  
अर्कप्रभैणवरचर्मधरोरु धामन्  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ५ ॥

तर्काभयेतकरतात शुकस्य कीट  
राज्य प्रदाघटित सङ्घटकात्म शक्ते ।  
भृत्यार्तिहन् प्रणत पूरुसुवंशकारिन्  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ६ ॥

काले जले जलद नील कृतोरुवर्मन्  
 आम्नायहारिसुरवैरि हरावतार ।  
 मत्स्यस्वरूप कृत कञ्ज वेददान  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ७ ॥  
 गीर्वाणदैत्य बललोलित सिन्धु मग्न  
 मन्थाचलोद्धरण देवसुधासिंहितोः ।  
 कूर्मस्वरूप धृतभूधर नीरचारिन्  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ८ ॥  
 क्षोणीहरोरुबलदैत्य हिरण्यनेत्र  
 प्रध्वंस दंष्ट्रयुगलाग्र सुरप्रमोद ।  
 पृथ्वी धराध्वरवराङ्ग वराहरूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ९ ॥  
 प्रह्लाद शोकविनिमोचन देवजात  
 सन्तोषदोरुबलदैत्य हिरण्यदारिन् ।  
 सिंहास्यमानुषशरीरयुतावतार  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १० ॥  
 देवेन्द्रराज्यहरदान वराजयज्ञ  
 शालार्थि रूपधर वज्र धरार्तिहारिन् ।  
 याञ्चामिषादसुरवञ्चक वामनेश  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ११ ॥  
 तातापकारिन्पवंशवनप्रदाह  
 वह्ने भ्रगुप्रवरराम रमानिवास ।  
 सूर्यांशुशुभ्र परशुप्रवरायुधाड्य  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १२ ॥  
 रक्षोधिराज दशकन्धर कुम्भकर्ण  
 पूर्वारि कालनमरुवरसूनुमित्र ।  
 सीतामनोहर वराङ्ग रघूत्थराम  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १३ ॥  
 कृष्णाप्रियाप्रियकरावनिभारभूत

राजन्यसूदन सुरद्विजमोददायिन् ।  
 भैष्मीपुरःसरवधूवर केलिकृष्ण  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १४ ॥  
 सद्धर्मचारिजिनमुख्य सुरारिवृन्द  
 सम्मोहन त्रिदशबोधन बुद्ध रूप ।  
 उग्रादिहेति निचयग्र सनामितात्मन्  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १५ ॥  
 ज्ञानादिसद्गुणविहीन जन प्रकीर्ण  
 काले कले स्तुरगवाहन दुष्टपारिन् ॥  
 कल्किस्वरूप कृतपूर्वयुग प्रवृत्ते ।  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १६ ॥  
 यज्ञैतरेय कपिलर्षभदत्तधन्वं  
 तर्यश्च सन्मुख कुमार सुयोषिदात्मन् ।  
 सद्धर्म सूनवर तापस हंसरूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १७ ॥  
 सत्केशवादि द्विषडात्मक वासुदेवा  
 द्यात्मादिना सुचतुरूप सुशिंशुमार ।  
 कृद्धोल्कपूर्वक सुपञ्चक देवरूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १८ ॥  
 नारायणादि शतरूप सहस्वरूप  
 विश्वादिना सुबहुरूप परादिना च ।  
 दिव्याजिताद्यमितरूप सुविश्वरूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ १९ ॥  
 श्रीविष्णुनामग सुवर्ण सन्धितात्मन्  
 मण्डूकसत्तनुज ह्रस्वसुनामकेन ।  
 ध्यातर्षिणा सुसुखतीर्थ कराब्ज सेव्य  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २० ॥  
 वैकुण्ठपूर्वक त्रिधामगतत्रिरूप  
 स्वक्ष्यादिधामगत विश्वपुरः सरात्मन् ।

सत्केशवादि चतुरुत्तरविंशरूप  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २१ ॥  
सत्वञ्चरात्र प्रतिपाद्यरमादिरूप  
व्यूहात् पुरासुपरिपूज्य नवस्वरूप ।  
विमलादि शक्तिनवकात्मक दिव्यरूप  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २२ ॥  
स्वायम्भुवादिमनुसंस्थित दिव्यराज  
राजेश्वरात्मक तथा सदुपेन्द्रनामन् ।  
सर्वेषु राजसु निविष्ट विभूति रूप  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २३ ॥  
प्रद्युम्न पार्थनरवैन्य बलानिरुद्ध  
पूर्वेषु संस्थित विशेष विभूति रूप ।  
ब्रह्मादि जीव निवहारव्य (हस्थ) विभिन्नकांश  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २४ ॥  
सत्पृश्निगर्भ पितृहृद्यगया प्रयाग  
वाराणसीस्थित गदाधर माधवात्मन् ।  
श्रीवेङ्कटेश सुविमानग रङ्गनाथ  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २५ ॥  
सद्वारकारजतपीठ सुवर्णपूर्व  
ब्रह्मण्य मध्यमठ पाजक संस्थितात्मन् ।  
रूपैर्गुणैरवयवैस्ततितः स्वनन्त  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २६ ॥  
वेदेश मद्गुरुकरार्चित पादपद्य  
श्रीकेशव ध्रुवविनिर्मित दिव्यमूर्ते ।  
श्रीभीमरथ्य मलतीर मणूर वासिन्  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २७ ॥  
श्रीपाण्डुरङ्ग सुस्यमन्तक गण्डिकाश्री  
मुष्णादिक्षेत्रवरसंस्थित नैकरूप (मूर्ते)  
काञ्चीस्थसद्वरदराज(सु) त्रिविक्रमात्मन्  
वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २८ ॥

आदिक्षान्ततवर्णसुवाच्यभूत (तैः)  
 निर्भेद मूर्तिकमहासदजादिरूपैः ।  
 शक्त्यादिभिर्विगत भेद दशैक रूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ २९ ॥  
 सूर्यानलप्रभृति हृदुरितौघतूल  
 राशि प्रदाहक सुदर्शन रूपकेश ।  
 नारायण प्रभृतिरूप सुपञ्चकात्मन्  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३० ॥  
 इच्छादि शक्ति त्रितयेन तथाणिमादि  
 शक्त्यष्टकेनविगताखिल भेदमूर्ते ।  
 सन्मोचकादि नवशक्ति विभिन्न देह (कांश)  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३१ ॥  
 जीवस्वरूप विनियामक बिम्बरूप  
 मूलेशनामक सुसारभुगिन्दु (भुगिन्ध) रूप ।  
 प्रादेशरूपक विराडथ पद्मनाभ  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३२ ॥  
 क्षी (क्षा)राब्धिसङ्गत महाजलवाडवाग्नि  
 स्थरूप परमाणुगताणु रूप (मूर्ते) ।  
 अव्याकृताम्बरगतापरिमेयरूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३३ ॥  
 ब्रह्मादि सर्वजगतः सुविशेषतोपि  
 सर्वत्र संस्थिति निमित्तत एव चास ।  
 व्यासः स वीति हि श्रुतेरिति व्यासनामन्  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३४ ॥  
 निर्दोष पूर्णगुणचिज्जडभिन्नरूप  
 श्रुत्यायतस्त्व धिगतोऽसि ततस्त्वनामन् ।  
 सत् श्रीकराख्य हरिनामक व्यूहरूप  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३५ ॥  
 पैलौडुलोमि वरजैमिनिकाशकृत्स्न

काष्णाजिनिप्रभृतिशिष्य सुसेविताङ्गे ।  
 कानीन मद्गुरु सुसेव्य पदाब्जयुग्म  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३६ ॥  
 नानाविकर्मजनिताशुभसागरान्तः  
 सम्भ्राम्यतः प्रतिहतस्य षडूर्मिजालैः ।  
 पुत्रादिनक्र निगृहीत शरीरकस्य  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३७ ॥  
 आशामद प्रभृति सिंहवृकादिसत्व  
 कीर्णेतो भवभयङ्कर काननेस्मिन् ।  
 पञ्चेषुचोरहतबोध सुवित्तकस्य  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३८ ॥  
 लक्ष्मीनिवास भवनीरविहीनकूप  
 मध्यस्थितस्य मदभार विभिन्नबुद्धेः ॥  
 तृष्णाख्यवारण भयेन दिगन्तभाजो  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ३९ ॥  
 अज्ञानमोहपटलाद्गत चक्षुषोलं  
 मार्गान्निजात् स्वलत ईश दयाम्बुराशे ।  
 किङ्गम्यमित्यविरतं रटतो रमेश  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ४० ॥  
 आजन्म जीर्णबहुदोषिण ईशजातु  
 त्वत्पाद नीरजयुगं हृदि कुर्वतो मे ।  
 देवापराधमनवेक्ष्यच वीक्ष्य भक्तं  
 वासिष्ठकृष्ण ममदेहि करावलम्बम् ॥ ४१ ॥  
 आम्राय भारत पुराण सरः प्रभूत  
 वासिष्ठ कृष्ण नु(स्तु)ति पङ्कजमालिकेयम् ।  
 देवत्वदर्थममलां रचितोचितां तां  
 कृत्वाध्रियस्व हृदये भवभूतिदो मे ॥ ४२ ॥  
 वासिष्ठकृष्ण पदपद्म मधुव्रतेन  
 वेदेशतीर्थं गुरुसेवक यादवेन ।

हस्तावलम्बनमिदं रचितं पठेद्य

स्तस्य प्रदास्यति करं बदरी निवासी ॥ ४३ ॥

वेदेशतीर्थगुरुमानस नीरजस्थ

श्रीमध्वहृत्कमलवासि रमा निवासः ।


प्रीतोस्त्वनेन शुभदो ममदेव पूजा

व्याख्या (स्तुत्या)दि सत्कृति कृतो बदरी निवासी ॥ ४४ ॥


इति श्रीयादवार्यविरचितं श्रीवेदव्यासकरावलम्बनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Krishnananda Achar

---

——  
*Shri Veda Vyasa Karavalambana Stotram*

pdf was typeset on December 3, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

